Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-1(A)| January - 2026

Original Article

पंडित दीनदयाल उपाध्यान की शौक्षिक परिद्रष्य में प्रासंगिकता

ऋषिकेश कुमार राम[1], डॉ.मु.असदुल्लाह[2]

[1]शोधार्थी, सामाजिक विज्ञान संकाय राजनीतिक विज्ञान जय प्रकाष विश्वविद्यालय, छपरा

[2]सहायक प्राध्यापक,राजनीतिक विज्ञान विभाग, एच. आर. कॉलेज, अमनौर (सारण) जय प्रकाष विश्वविद्यालय,छपरा।

Email: rishikeshkumar2k@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2026-180139
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 1(A)
Pp. 195-198
January - 2026

Submitted: 18 Dec. 2025
Revised: 28 Dec. 2025
Accepted: 13 Jan. 2026
Published: 31 Jan. 2026

शोध सारांश

उपरोक्त कथनों से स्पष्ट होता है कि पंडित दीनदयाल उपाधाय जी षिक्षा को कितना महत्वपूर्ण मानते थे। बिना षिक्षा के कोई भी व्यक्ति समाज की सेवा नहीं कर सकता है। दीनदयालजी ने 1948 में अपने देष की सेवा हेतु राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से जुड़े। उन्होंने हर प्रकार के सदेष की सेवा मे अपना योगदान दिया। चाहे वह सामाजिक या धार्मिक क्षेत्र ही क्यों ने रहा हो उनका राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ से जुड़ने का मुख्य ही राष्ट्र की सेवा करना था। उन्होंने भारतीय समाज में व्याप्त बुराईयों से लड़ने के लिए षिक्षा को एक अस्त्र के रूप में इस्तेमाल करने का आह्वान किया। षिक्षा का संबंध व्यक्ति और समाज से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है। समाज के हित एवं विकास के लिए बच्चों की षिक्षा अत्यंत आवष्क है। उपाध्याय जी भारतीय संस्कृति के अनुरूप षिक्षा कराने के पक्षधर थे। वह षिक्षण संस्थाएं विकसित करना चाहते थे, परन्तु विकेंद्रित व्यवस्था के पक्षधर थे। उनके अनुसार, षिक्षा के माध्यम प्रमुख रूप से तीन हो सकते हैं संस्कार, अध्यापन और स्वाध्याय। प्रस्तुत शोधपत्र में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के शैक्षिक चिंतन पर प्रकाष डाला गया है।

प्रस्तावना

एकात्म मानववाद में मंत्रदृष्टा पंडित दीनदयाल उपाध्याय राजनीति में भारतीय संस्कृति एवं परंपरा के प्रतिनिध थे उनका स्थान सनातन भारतीय प्रज्ञा प्रवाह को आगे बढ़ाने वाले प्रज्ञा–पुरूषों में अग्रगण्य है। दीनदयालजी ने अपना पूरा जीवन देष हित में समर्पित कर दिया और राष्ट्र चिंतन के द्वारा लोगों को और राजनीतिक को नया रास्ता दिखाया।

उनकी सामाजिक सक्रियता राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के कार्यकत्ता ने नाते ही रही है। लेकिन उनकी सक्रियता और संस्कारों को सम्मान देते हुए उन्हें राजनीतिक क्षेत्र का दायित्व मिला था। लेकिन उन्होंने कभी भी अपने पर राजनीति को हावी नहीं होने दिया। इसके अलावा वे लेखन के माध्यम से भी अपनी सक्रियता और सामाजिक भूमिका अदा करते थे। वे पत्रकार भी थे। वस्तुतः दीनदयाल उपाध्याय राजनीतिक क्षेत्र में सामजिक व सांस्कृतिक दृष्टिपथ के प्रतिनिध थे। राजनीति में संस्कृति के राजदूत थे। राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के एक प्रषिक्षण षिविर में भाषण करते हुए उन्होंने कहा, संघ के स्वंयसेवकों को राजनीति से दूर रहना चाहिए जैसे कि मैं हूँ। एक राजनीतिक दल के महामंत्री का यह कथन पहेली सरीखा था। अतः स्पष्टीकरण करते हुए उन्होंने कहा, "संघ का स्वंयसेवक समाज के हर क्षेत्र में सामाजिक सांस्कृति कार्यकर्त्ता के नाते ही जाना जाता है। विभिन्न राजनीतिक–आर्थिक संस्थाओं में सक्रिय काम करते हुए भी वह उन संस्थाओं व क्षेत्र की एकांगिता को अपने ऊपर हावी नहीं होने देता। राजनीतिक में जाते ही आज जो सत्तावाद एवं दलवाद व्यक्ति पर हावी होता है, इसको राजनीतिक क्षेत्र की मजबूरी माना जाता है, वे एक स्वंयसेवक के रूप में इन सब से दूर रहे।

राष्ट्रव्यापी आंदोलन के प्रणेता

दीनदयाली ने राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ को सर्वव्यापी बनाने के लिए लोकसंचार, लोकचेतना एवं लोकसंग्रह का भी कार्य किया। राष्ट्रीय स्वंसेवक संघ को एक राष्ट्रव्यापी आंदोलन बनाने में जिन कुछ लोगों का योगदान है, दीनदयाल उपाध्याय उनमें से एक थे। जिस सांस्कृतिक संगठन को गोलवलकरनेएक व्यापक आंदोलन बनाया, अनुषासिक कार्यकर्त्ताओं की कार्यकर्त्ता–निर्माण के कार्य में उतने ही महत्वपूर्ण थे जितने कि गोलवलकर, एकनाथ, रानाडे या बाबा साहब आपटे आदि।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
ऋषिकेश कुमार राम, शोधार्थी, सामाजिक विज्ञान संकाय राजनीतिक विज्ञान जय प्रकाष विश्वविद्यालय, छपरा

How to cite this article:
राम, . ऋषिकेश . कुमार ., & मु.असदुल्लाह. (2026). पंडित दीनदयाल उपाध्यान की शौक्षिक परिद्रष्य में प्रासंगिकता. Journal of Research & Development, 18(1(A)), 195–198. https://doi.org/10.5281/zenodo.18619580

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.18619580
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-1(A)| January - 2026

उन्होंने संगठन के मस्तिक का काम किया।

पुस्तकों द्वारा सामाजिक परिवर्तन

दीनदयालजी साहित्य के क्षेत्र में बहुत सक्रिय थे। उसी की बदौलत उन्हें एक बौधिक व्यक्ति के रूप में पहचान मिली राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के प्रारंभिक काल एवं उसके संस्थापक के विषय में प्रथम शोधकार्य ने नाते नारायणहरि पालकर ने डॉ० हेडगवार का जीवनचरित लिखा। यह मूल रचना मराठी थे थी। दीनदयल जी ने ही उसको हिंदी पाठको को उपलब्ध करवाया। उन्होंने सहज ही पुस्तक का हिंदी अनुवाद कर दिया। राष्ट्रीय स्वंय संघ में जो साहितय उपलब्ध है वह मुख्यतः गोलवलकर, उमाकांत केषव उपाधाय, बाबा साहेब आपटे, एकनाथ रानाडे, दीदयाल उपाध्याय व दत्तोपंत ठेंगडी का हीह ै।

अखिल भारतीय दल के महामंत्री के रूप में सक्रिय होते हुए भी दीनदयालजी संघ कार्य के समक्ष राजनीति को गौण समझते थे। वे प्रतिवर्ष देष भर में लगभग तीस–चालीस दिन संघ–षिक्षा वर्ग के लिए प्रवाह करते थे। संघ की प्रत्येक बैठक में अवष्य उपस्थित होते थे।

गत वर्ष (1967) विभिन्न राष्ट्रीय कार्य में भाग लेने वाले कुद स्वंय सेवक नागपुर में एकत्र थे। ठीक उसी समय सत्तरप्रदेष में कांग्रेस मंत्रिमंडल का पतन हुआ था। साझाा में मंत्रिमंडल गठित करने हेतु विपक्षी दलों की सरगर्मियाँ तेज हो गई थी। कुछ कार्यकर्त्ता जिन्हे नागपुर पहुँचना था इस भँवर में फस गए और नागपुर न पहुँच सके। इस बात का पता लगने पर दीनदयाल उपाध्याय उद्विग्न हो उठे। वे बोले, "हम पहले, स्वंयसेवक हैं और कुछ बाद में। जब भी संघ द्वारा कोई आह्वान दिया जाता है तो हमारा कर्त्तव्य हो जाता है कि अन्य सभी बातों को एक ओर फेंककर संघ की पुकार पर चलें।

अर्थात् उपाध्याय जी संघ कार्य के समझ अन्य कार्य की प्राथमिकता नहीं मानते थे। राष्ट्रीय स्वंयसेवा संघ ने समाज जीवन में जो राष्ट्रहित, वद्धता तथा संगठन कौषल उत्पन्न करने का कार्य किया है, उनमें दीनदयाल उपाध्याय जी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

पंडित दीनदयाल जी के षिक्षा एवं षिक्षक संबंधी विचार

पंडित दीनदयाल उपाध्याय भारतीय संस्कृति एवं स्वदेषी षिक्षा प्रणाली के पक्षघर थे। उन्होंने सदैव स्वदेषी षिक्षा प्रणाली को ही महत्व दिया एवं उत्थान का मार्ग माना। उनके विचार में हमारी सांस्कृतिक धरोहर ही हमें अपने गौरवमयी इतिहास से जोड़ने में समृद्ध है और हमारी संस्कृति स्वदेषी षिक्षा प्रणाली के द्वारा ही समाज में वांछनीय परिवर्तन लाया जा सकता है। उनके विचार मे हम स्वतंत्र होते हैं। पंडित दीनदयाल उपाध्यायजी के अनुसार किसी भी राष्ट्र की उन्नति उसकी संस्कृति एवं अखंडता पर निर्भर करती है एवं गुणवत्ता से ओत प्रोत मूल्यों वाली विचारधाराएं आवष्यक है। गुणवत्ता एवं नैतिक मूल्यों वाली विचारधारायें हमारी स्वदेषी षिक्षा प्रणाली की विषेषता रही है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी अनुसार षिक्षा प्रक्रिया में छात्र प्रमुख स्थान रखता है। छात्र षिक्षा प्रक्रिया का वह महत्वपूर्ण अंग है जिसके बिना यह बिना प्रक्रिया क्रियान्वित हो ही नहीं सकती। उनके मतानुसार राष्ट्र की उन्नाति संस्कृति एवं अखंडता उस राष्ट्र के छात्र पर निर्भर करती है। उन्होंने सदैव से ही राष्ट्र की एकता एवं अखण्डता पर जोर दिया। अपनी विचारों को उन्होंने सदैव नवीन–प्राचीन, वैज्ञानिक–धार्मिक, आध्यात्मिक, दार्षनिक एवं भौतिक सभी बिन्दुओं पर भली भाँति जाँच कर प्रस्तुत किया उन्होंने अपने अध्ययन में भारतीय संस्कृति का ज्ञान एवं अनुसरण को ही राष्ट्र एकता, अखंडता एवं उज्जवत उत्कृष्ट भविष्य हेतु अनिवार्य माना। उनके विचारों ने नीवन अंग्रेजों द्वारा प्रदान की गई षिक्षा प्रणाली हमारे देष के लिए वैषाखी कितनी भी अच्छी क्यों नहो हमेषा अधूरेपन का अहसास रहता है। किसी भी राष्ट्र की उन्नति उसके नौजवान युवा पीढ़ी पर आधारित होती है उनके विचारों "हम भूत के ऋण से मुक्त हो सकते है, यदि हम भविष्य को अपना ऋणी बनाँए। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के शैक्षिक दर्षन से विदित होता है कि षिक्षा के माध्यम यह प्रमुख रूप से तीन हो सकते हैं। संस्कार, अध्यापन और स्वाध्याय।

संस्कार

व्यक्ति अपने आस–पास चारों ओर के समाज से निरंतर कुद न कुछ सीखता है, जिस संस्कार की संज्ञा दी गई है। इस समाज का प्रत्येक व्यक्ति षिक्षक का कार्य करता है। स्वभावतः पिछली पीढ़ी के आचार–विचार का संस्कार भावी पीढ़ी पर पड़ जाता है। अर्थात् माता–पिता, परिजन, गुरूजन, सहपाठी, समाज ने नेता आदि सभी का प्रभाव भावी पीढ़ी पर पड़ता है।

अध्यापन

अध्यापन के अंतर्गत निष्चित पाठ्यक्रम के अनुसार षिक्षण के द्वारा प्रदान करना होता है, जबकि मानव के अर्जित ज्ञान को भाषा के द्वारा बहुत ही कम मात्रा में व्यक्त किया जा सकता है तथा इसमें से कुछ ही लिपिबद्ध है। गुरूकुल पद्यति में पाठ्यक्रम के अंतर्गत वेदों, में हमारे युवा छात्रों को हमारी सांस्कृतिक धरोहर से अवगत कराया जिससे वे अपनी संस्कृति को समझें एवं उसी आधार पर देष की उन्नति एवं अखंडता हेतु प्रस्तुत हो।

दीनदयाल उपाध्याय जी अपने पूरे जीवन अपनी दूर दृष्टा। शैक्षिक एवं दार्षनिक विचारधारा के माध्यम से प्रयोजनवादी विचारधारा को हरकर भारतीय संस्कृति को प्रतिष्ठित करने हेतु प्रयासरत रहे।

आजादी के बाद चाहे वह राजनीतिक क्षेत्र हो, आर्थिक क्षेत्र हो या सामाजिक क्षेत्र, पष्चिमी चिंतको को आदर्ष और एक मात्र समाधान मानकर उसका अंधानुकरण हमने किया, षिक्षा भी इससे अछूती नहीं रही। हमारा जो भी परंपरागत है, वह हेय है, इस धारणा से संभवतः हमारे नीति–नियंता मुक्त हो पाए। किंतु इसका परिणम क्या हुआ? क्या हमारे विष्वविद्यालय अच्छे नागरिकों का निर्माण कर पाए? क्या हमारी षिक्षा व्यवस्था मानवीय मूल्यों का विकास कर पाई ?क्या हम युवाओं को आत्मनिर्भर बना पाए? संभवतया नहीं और इसी का परिणाम है कि आज के अपराधी, अनीति का आचरण करने वाले नौकरषाह, हर न देने वाले

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-1(A)| January - 2026

व्यापररी, उपाधियों के अर्धन के बाद भी रोजगार के नाम पर किसी भी जगह लग जाने की लालसा रखने वाले युवा, सब उसी व्यवस्था का परिणाम है जो विगत 250 वर्षों से यहां चली आ रही है। क्या ऐसे में हमें पुनरावलोकन नहीं करना चाहिए।

दीनदयाल जी ने जब कहा कि पष्चिमी राजनीतिक और आर्थिक चिंतनों को विकास की दिषाा मानकर भारत के ऊपर आरोपण करके, भारत के प्रतिबिंबित बनाने को प्रयास हुआ है, तो यह कथन जितना राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्र पर लागु होता है, उतना ही षिक्षा पर भी। जिस लंदन विष्वविद्यालय को आदर्ष मानकर 21वीं सदी में भारतीय विष्वविद्यालय का रूप गढ़ा गया, वह तो स्वंच कुछ समय के बाद बदलाव की बयार के साथ आगे बढ़ गया पर हम उसी लकीर को पीटते रह गए। यहां भारतीय से आषय ने तो पुरानी गुरूकुल व्यवस्था को पुनः लागु करने से है, न ही वर्तमान संस्थाओं को पूर्णतया समाप्त करने से। क्योंकि दीनदयाल जी ने स्वयं कहा था पुनः लौटकर चलना वांछनीय हो या न हो, असंभव समय की गति को पीछे नहीं लौटाया जा सकता, परंतु वे यह भी चेताते हैं कि विदेषी विचार सार्वलौकिक नहीं, परिस्थितिजन्य हैं, वे परिस्थिति विषेश और प्रकृति की उपज हैं। अतः दोनों दिषाओं में अतिरेक की आवष्यकता नहीं है। इस विचार से हमें यह ग्रहण करने की आवष्यकता है कि किस प्रकार की षिक्षा व्यवस्था हमारी परिस्थिति और प्रकृति के अनुरूप है? हमें उसके लिए स्वयं को तैयार करना होगा।

अब हम जब षिक्षा के भारतीय परिप्रेक्ष्य का चिंतन कर रहे हैं, तब हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि वह हमारी आवष्यकताओं, मूल्यों और संस्कृति के अनुरूप हो । दीनदयाल जी के शब्दों में प्रत्येक देष की अपनी विषिष्ट ऐतिहासिक, सामाजिक और आर्थिक परिस्थिति होती है। अतः हमें अपनी संस्कृति का विचार करना होगा, अपनी संस्कृति के तत्वों की पहचान करनी होगी और उनका पोषण व संवर्धन करना होगा। यह महती कार्य भारत के विष्वविद्यालयों को करना होगा। उपनिषदों के ज्ञान के साथ ही कषषि, युद्ध, कौषल, अर्थषास्त्र, राजनीति, चित्रकारी, संगीत, भिक्षाटन का भी स्थान प्रमुखता से होता था। प्रत्येक षिष्य अपनी क्षमता एवं रूचि के अनुसार कौषल को गुरू से प्रत्यक्ष रूप से अर्जित करता था। उनके अनुसार, अध्ययन के अंतर्गत वे सब क्रियाएँ आती है, जिनके द्वारा कोई व्यक्ति या व्यक्ति समूह अपने पास के ज्ञान को दूसरे को देने का प्रयास करता है। यह प्रयास विद्यालयों में ही नहीं अपितु घर–घर में खेत –खलिहान, कारखानों, बाजार, कला–भवनों खेत के मैदान में भी चलता रहता था।

स्वाध्याय

तीसरा माध्यम द्वारा मनुष्य स्वंय ज्ञान अर्जित करता है जिसके लिए लिपि ज्ञान का होना आवष्यक है। स्वाध्याय मनुष्य का स्वंय अध्यापन हैं पठन, मनन और चिंतन के सहारे मनुष्य ज्ञान को आत्मगम्य करता है। बिना स्वाध्याय के न तो प्राप्त ज्ञान टिकता है और न बढ़ता है। स्वाध्याय के बिना ज्ञान को जीवन का अंग बनाकर तेजस्वी बनाने का तो प्रष्न ही नहीं। पठन, मनन और चिंतन के द्वारा अर्जित ज्ञान मनुष्य के व्यक्तित्व को प्रभावषाली बनाता है।

षिक्षा का प्रबंध रूचि के अनुसार

दीनदयाल जी ने लिखा है कि प्रथमतः षिक्षा की प्रारंभिक एवं माध्यमिक अवस्थाओं में हमें विद्यार्थी के उसके घरेलु धंधे के वातारण से अलग करने की जरूरत नहीं। बल्कि हम ऐसा प्रबंध करें कि वह उस वातारण मे अधिक रह सके तथा अज्ञात रूप वह धंधा सीख सके।

धीरे–धीरे हमें यह भी प्रयत्न करना होगा कि अपने अभिभावकों का सहयोगी बन सके। माध्यमिक षिक्षा समाप्त करने तक नवयुवक को अपना धंधा भी आना चाहिए। हो सकता है कि उन धंधों की योग्यता के प्रमाण पत्र की हमें कुछ व्यवस्था करनी पड़े। माध्यमिक षिक्षा तक कुषाग्र बुद्धि सिद्ध होने वाले नवयुवकों की आगे षिक्ष का प्रबंध उनकी रूचि के अनुसार किया जाय।

रचनात्मक कार्य

पढ़े–लिखे लोगों की षिक्षा के औद्योगिक षिक्षा केंद्र खोले जाएँ वे षिक्षा के साथ–साथ काम भी कर सकें। ये केंद्र सरकार के द्वारा बड़े पैमाने पर खोले जाने चाहिए।

अपने क्षेत्र के छोटे–छोटे उद्योगों की तालिका बनाकर उनमें षिक्षार्थी के रूप में एक–एक दो व्यक्तियों को रखा जा सकता है। आज बहुत से कारोबार ऐसे हैं जिनमें रोजी कमाई जा सकती है। हाँ सीखे हुए लोगों की कमी है। छोटे–छोटे केंन्द्र भी सहकारी आधार पर चलाए जा सकते है। स्वदेषी की भावना एवं पारस्परिक संबंध के सहारे उनके लिए बाजार भी मिल सकता है। इनके अतिरिक्त और भी रचनात्मक कार्य हाथ में लिये जा सकते है। यहाँ दीनदयाल जी को एक और चेतावनी पर ध्यान देने की आवष्यकता है, उनका कहना है, "उत्साह में संकीर्ण राष्ट्रवाद के विचार को राष्ट्र की प्रगति में बाधक नहीं बनने देना चाहिए।"

निष्कर्ष

इस प्रकार एकात्म मानव दर्षन का षिक्षा एवं षिक्षक दोनों ही के ऊपर प्रत्यक्ष एवं परोक्ष दोनों रूपों में प्रभाव है। दीनदयाल जी एक षिक्षाविद् नहीं थे लेकिन भारतीयता और राष्ट्रीय चेतना को समझने वाले एक ऋषि थे। उन्होंने जीवन में जो कुछ अनुभव किया उसे ही एकात्म मानव दर्षन के रूप में हमारे सामने रखा। उनके विचारों से षिक्षा जगत एक ऐसी दिषा ले सकता है। जो वर्तमान समय में आ रही है। बहुत सी शैक्षिक समस्याओं का समाधान हो सकता है। एकात्म मानव दर्षन द्वारा षिक्षा के क्षेत्र में नयी क्रांति का उद्येष्य संभव है एवं इन विचारों द्वारा नागरिक अपने परिवार, समाज एवं राष्ट्रहित के उत्थान के लिए योगदान कर देष का चहुँमुखी विकास करने में अपनी सक्रिय भूमिका निभा सकता है। आवष्यकता है एक प्रारंभ की, जो किसी को तो करना होगा।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-1(A)| January - 2026

संदर्भ सूची

1. पंडित दीनदयाल उपाध्याय, एकात्म मानवदर्षन :– विविध आयाम (सं.) मनोज कुमार सक्सेना, संस्करण प्रथम, 2018, प्रकाषक अनामिका पब्लिषर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लिमिटेड, पृ. 107
2. प्रखुर राष्ट्रभक्त पं. दीनदयाल उपाध्याय :– डॉ. रमेष पोखरियाल 'निषंक', प्रकाषक, डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि., संस्करण 2019, पृ.61
3. प्रखुर राष्ट्रभक्त :पं. दीनदयाल उपाध्याय :– डॉ. रमेष पोखरियाल 'निषंक', प्रकाषक, डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि, संस्करण, 2019 पृ. 63
4. दीनदयाल उपाध्याय :– कर्तत्व एवं विचार : डॉ.महेषचन्द्र शर्मा, प्रभात प्रकाषन, पृ. 283
5. दीनदयाल उपाध्याय :– एकात्मक मानव दर्षनः सुरूचि प्रकाषन, नई दिल्ली, 55, संस्करण, 2015, पृ. 17–18
6. प्रखुर राष्ट्रभक्त, पं. दीनदयाल उपाध्याय :– डॉ. पोखरियाल 'निषंक' प्रकाषक डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि., संस्करण 2019 पृ. 197–198
7. पं.दीनदयालजी प्रेरक विचार, सं. डॉ. रवींद्र अग्रवाल, प्रकाषक विद्या विहार, नई दिल्ली, संस्करण, प्रथम, 2018 पृ. 139
8. एकात्म मानववाद के प्रणेता :– दीनदयाल उपाध्याय अमरजीत सिंह, प्रभाव प्रकाषन, दिल्ली, पृ. 247
9. पं. दीनदयाल कर्तत्व एवं विचार :– डॉ. महेषचन्द्र शर्मा, प्रकाषन, पृ. 279
10. पं. दीनदयाल उपाध्याय एकात्म मानव दर्षन – विविध आयाम (सं.) मनोज कुमार सक्सेना, प्रकाषन, अनामिका पब्लिषर्स संस्करण, 2018 पृ. 98